युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के छठवीं पुण्यतिथि

के उपलक्ष्य में आयोजित

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर 04 सितम्बर, 2020। गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में **युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के 6वीं पुण्यतिथि** के अवसर पर आज पांचवे दिन '**भारतीय संस्कृति एवं गो–सेवा**' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में **गौ–सेवा आयोग, उ0प्र0 के अध्यक्ष श्री श्यामनन्दन सिंह** ने कहा कि भी किसी देश की संस्कृति ही उसकी आत्मा होती है। भारत वर्ष में लगभग 1200 वर्षों के संघर्ष के बाद भी भारतीय संस्कृति आज जीवित है, जहां दुनिया में बहुत सारे देश ऐसे हैं, जो अपनी संस्कृति को छोड़ चुके हैं, इसके मूल में गाय ही है। गाय हमारे भारतीय संस्कृति की प्राण है। प्राचीन काल से ही गाय भारतीय संस्कृति व परंपरा का मूलाधार रही है। गंगा, गोमती, गीता, गोविंद की भांति शास्त्रों में गाय भी अत्यंत पवित्र मानी गई है। गोपालन व गो–सेवा तथा गोदान की हमारी संस्कृति में महान परंपरा रही है व गो–सेवा ही सुख व समृद्धि का एक मार्ग है।

उन्होंने कहा कि प्राचीन काल से ही धर्म और संस्कृति की मूलाधार गाय रही है। वेद–पुराण, स्मृतियां ये सभी गो–सेवा की उत्कृष्टता से ओत–प्रोत हैं। भारतीय पुरातन संस्कृति के अनुसार धर्म–अर्थ, काम–मोक्ष इन चतुर्विध पुरुषार्थों का साधन हमारी संवेदनमयी, स्नेह वत्सला यह गौमाता ही रही हैं। भारत की संस्कृति मूल रूप से गो–संस्कृति कही जाती है तथा भारतीय समाज ने गाय को मां की संज्ञा दी है एवं गाय की उत्पत्ति की कथा समुद्र मंथन से जुड़ी हुई है। बाल गंगाधर तिलक, महामना मदन मोहन मालवीय, महात्मां गांधी व जितने भी महापुरुष रहे हैं उन सभी ने स्वतंत्रता संग्राम के साथ–साथ इस गौ सेवा को विशेष महत्व दिया है। यदि इस देश का विकास करना है तो उसमे मूल तत्व गाय को मानना पड़ेगा। हमारे पुराणों में गाय को धरती माता से भी अधिक महत्व दिया गया है और इसीलिए पुराणों में गाय को 'गावो विश्वस्य मातरः' संपूर्ण विश्व की माता की संज्ञा दी गई है।

ऋग्वेद का उद्धरण देते हुए उन्होंने कहा कि जिस स्थान पर गाय की सेवा होती है वहां का स्थान अत्यंत निर्मल व पवित्र हो जाता है। गाय हमारी श्रद्धा के साथ–साथ हमारी अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है। मानो संपूर्ण सृष्टि के लिए गाय अनुपम उपहार है। गाय एक ओर जहां दूध का भंडार है वही जैविक खेती व कीटनाशकों का कारखाना तथा औषधियों का अक्षुण्ण औषधालय भी है। गाय का गोबर व गोमूत्र महा औषधि ही नहीं अपितु जगत को श्रेष्ठ वरदान है।

विशिष्ट वक्ता के रूप में गीता प्रेस, गोरखपुर के उत्पाद प्रबंधक डॉ0 लाल मणि तिवारी ने कहा कि वेदों का उद्घोष पुराणों की पुकार अनादिकाल से गौ सेवा का आदेश देती चली आ रही है व गाय हमारी भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। ऋग्वेद में कहा गया कि गाय का निवास जिस स्थल पर होता है वह स्थल तीर्थमय बन जाता है। गाय अपनी उत्पत्ति के समय से ही भारत देश में पूज्य रही है व विश्व की मां है ऐसा उद्घोष हमारे शास्त्रों में किया गया है, जो गाय की विशिष्टता को प्रदर्शित करता है। महामना मालवीय 1958 में कोलकाता के अधिवेशन में कहा था कि गाय मानव मात्र के लिए पूज्य व वंदनीय है, इसकी हत्या जघन्य अपराध है। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश सरकार ने इस बात को विशेष महत्व दिया और गो–रक्षा के लिए विशेष प्रावधान बनाया तथा गो–सेवा आयोग का गठन कर अनेक योजनाएं बनाई।

उन्होंने कहा कि हमारे उपनिषदों में बताया गया कि केवल गो–सेवा करने मात्र से मनुष्य धर्म–अर्थ, काम व मोक्ष इन चारों पुरूषार्थों को प्राप्त कर सकता है। प्राचीन काल में गाय को गोधन माना जाता था और राजाओं से लेकर सामान्य ग्रामीण जन तक के लिए गोधन उसके समृद्धता कि पहचान बनती थी। आज का समाज इस महत्वपूर्ण गोवंश को न पालकर श्वान का पालन कर रहा है, यह अत्यन्त ही दुखद है, हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

दिगम्बर अखाड़ा अयोध्या धाम से पधारे महंत सुरेश दास जी महाराज ने कहा कि प्रातः काल से ही हमारी संस्कृति आरंभ हो जाती है, यह भारत की संस्कृति है। किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए चार वस्तुओं की आवश्यकता होती है, शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात व संस्कृति। इसलिए गोरखनाथ मंदिर में शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है।

उन्होने कहा कि हम जिस दिन गोसेवा को अपना प्रथम कर्तव्य मान लेंगें। उस दिन विश्व गुरु के पद को पुनः स्थापित करने में समर्थ हो सकेंगे।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष व पूर्व कुलपति प्रो0 उदय प्रताप सिंह ने कहा कि मनुष्य के लिए जन्म से लेकर वृद्धावस्था पर्यन्त यदि कोई पौष्टिक पदार्थ लेने योग्य है, तो वह गाय का दूध ही है। भारतीय संस्कृति के किसी भी आध्यात्मिक कार्य में गाय के गोबर, मूत्र, दूध, दही व घी को पंचगव्य के रूप में लेकर ही कार्य संपादन किया जाता है। प्रसन्नता का विषय है कि यह गोरक्षपीठ जिस गाय की रक्षा के विशेष उद्देश्य के लिए स्थापित हुई उसी उद्देश्य को लेकर निरंतर आगे बढ़ रही है।

कार्यक्रम में प्रसिद्ध गौ सेवक व पूर्व पशुधन प्रसार अधिकारी श्री अरुण कुमार बैरागी ने 'तैंतीस कोटि देवताओं की वंदनीय गो माता है' इस स्वरचित कविता के द्वारा गाय के महत्व को प्रदर्शित किया।

मंच पर दिगंबर अखाड़ा के महंत सुरेश दास जी महाराज, प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, देवीपाटन के महन्त मिथिलेशनाथ जी उपस्थित रहें। वैदिक मंगलचारण डॉ0 रंगनाथ त्रिपाठी और गोरक्षाष्टक पाठ प्रांजल त्रिपाठी तथा संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह ने किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डॉ0 प्रदीप राव, डॉ0 शैलेन्द्र सिंह, प्रमथनाथ मिश्र, डॉ0 अरुण प्रताप सिंह, डॉ0 अरविन्द कुमार चतुर्वेदी, डॉ0 अभिषेक पाण्डेय, डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह, डॉ0 प्रांगेश मिश्र डॉ0 फूलचन्द गुप्ता, ई0 पी0के0 मल्ल, विनय गौतम आदि का विशेष योगदान रहा।